International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 5; Issue 3; March 2018; Page No. 89-92

रीवा जिले के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन

डॉ0 सर्वेश कुमार मिश्र
पी–एच.डी. (शिक्षा) – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन पर आधारित है। दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा के कुछ आधार इस प्रकार हैं – नैतिक और वैधानिक जवाबदेही को पूरा करना, उपयुक्त शिक्षण, प्रविधियों का आवश्यकतानुसार चयन करना, विद्यालय एवं छात्रों के बीच समन्वय स्थापित करना, पर्यावरण एवं समाज उपयोगी कार्यों के प्रति छात्रों को क्रियाशील बनाये रखना तथा आचरण की शुद्धता एवं स्वस्थ नागरिकता की भावना जागृत करना। दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापकों में व्यवहार, कार्यकुशलता, शिक्षण व्यवहार, ज्ञान पदार्पण आदि का विकास करके परिवर्तन लाया जा सकता है। शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया से छात्र और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्द : रीवा जिला, दक्षता, प्रारंभिक शिक्षा, शिक्षण प्रक्रिया।

1. प्रस्तावना
मानव विकास के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। बिना शिक्षा के मानव का सर्वांगीण विकास संभव नही है। बालक एवं बालिका ज्यों–ज्यों उम्र में बढ़ते है, उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में ज्ञार्नाजन की आवश्यकता होती है। शिक्षा बुराइयों को दूर कर अन्तरिक गुणों को प्रकाशित करती है। इसी प्रकाश में व्यक्तित्व का निर्माण होता है। राश्ट्र के विकास का आधार शिक्षा है। जिस राष्ट्र में शिक्षित व्यक्तियों की संख्या जितनी अधिक होती वह देश उतना ही अधिक विकास करता है। क्योंकि राष्ट्र का विकास उस राश्ट्र की जन साधारण शिक्षा पर ही निर्भर है।
प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में प्रारम्भिक शिक्षा की प्राथमिकता महत्वपूर्ण है। यह प्रथम सीढ़ी है, जिसे पार करके ही राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकता है। प्रारंभिक शिक्षा राश्ट्रीय जीवन का अभिन्न अंग है। प्रारंभिक शिक्षा राष्ट्रीय विचार धारा एवं चरित्र निर्माण की कुन्जी है। यह मानव विकास के समस्त उपादानों में सर्वोत्तम है। प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था का प्रथम सोपान है। प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के स्तर को प्रभावित करती है। शिक्षा मानव के विकास की जननी है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का उत्तम साधन है। शिक्षा वह ज्ञान है, जो बालक रूपी हीरे की कलाश रूपी बुराइयों को दूर कर उनके आन्तरिक गुणों को जगमगाता है। जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

"सच्ची शिक्षा केवल कुल पाठो को याद कर पढ़ना करना ही नही, वरन उसे अपने जीवनयापन एक उद्देष्यों पूर्ण कार्यो में भाग लेना भी है।"

– राधाकृष्णन रियाटे

शिक्षक का कार्य शिक्षा देना है शिक्षण किस प्रकार दिया जाय इनके लिए शिक्षक को प्रशिक्षण मिलना आवश्यक है। दिन–प्रतिदिन सामाजिक ढांचे एवं उसकी उपयोगिता एवं जरूरत वदलती रहती है। नित्य नवीन ज्ञान प्रकट हो रहे है और नया सिद्धान्त प्रतिपादित हो रहे है। अतः समय–समय पर अपने शिक्षकों, प्राचार्य आदि द्वारा परिवर्तित पाठ्यक्रम एवं दक्षताओं की परिवर्तित पाठ्यक्रम विषय ज्ञान एवं दक्षताओं से परिचित करावे एवं उनके शिक्षण में गुणवत्ता लाने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण बाद में शिक्षण कौशल में सुधार के साथ–साथ छात्रों के अधिगम उपलब्धि में सुधार हेतु दक्षता आधारित प्रशिक्षण डाइट व जिला शिक्षा केन्द्र के माध्यम से ब्लाक एवं संकुल स्तर स्कूल दिया जा रहा है। "प्रशिक्षण से शिक्षकों में नई ऊर्जा का संचार होता है।"
अतः दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के लिए शिक्षकों को दक्षता आधारित प्रशिक्षण देकर नई शिक्षण विधाओं, नये कौशल तथा पाठ्यक्रम, कठिनाइयों का निदान कर स्तर में वृद्धि हेतु दक्षता आधारित शिक्षण हेतु तैयार किया जा रहा है, ताकि शिक्षक अपने शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करने के साथ–साथ समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन सजगता से व्यवस्थित रूप से कर सकता है।

2. शोध की आवश्यकता एवं महत्व
मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा संचालित प्रत्येक कार्यक्रम का बच्चों को प्रत्यक्ष या परोक्ष लाभ मिले और लक्ष्य प्राप्ति की ओर कार्यक्रम बढ़ सके, यही इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है। कोई भी योजना तभी सफल हो सकती है। जब उसका क्रियान्वयन क्रमबद्ध तरीके से किया जाय। प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए, प्रत्येक बालक के अधिकार की संवैधानिक कल्पना को साकार करने के लिए और सभी के लिए शिक्षा की गुणवत्ता की जरूरत के प्रति संवेदनशील संस्थाओं मं प्रारंभिक शिक्षा का विकेन्द्रीकरण तथा प्रबंधन में सहभागिता के लिए अधिनियम बनाया गया है। जिसका प्रयोग कर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।

3. उद्देश्य
कोई ज्ञान या कोई अन्वेषण उद्देश्य विहीन नहीं होता है। अतः इस शोध के भी कतिपय उद्देश्य हैं। उद्देश्य के महत्व को बताते

हुए जॉन डीवी महोदय[1] ने कहा है–''किसी शैक्षिक अनुसंधान परियोजना पर तब तक कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए जब तक उस अध्ययन के परिणाम किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति एवं प्रक्रिया को प्रभावकारी ढंग से श्रेष्ठतम बनाने की संभावना प्रस्तुत नहीं कर देते।''

अतः शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं–

1. प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
2. दक्षता आधारित शिक्षा की वस्तु स्थिति का पता लगाना।
3. दक्षता आधारित शिक्षा का छात्रों पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना।
4. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का पता लगाना।

4. परिकल्पनाएँ

शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

परिकल्पना को परिभाषित करते हुए डॉ0 डी0 एन0 श्रीवास्तव (1992)[2] ने लिखा है कि परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के अनुमान पर आधारित कल्पनात्मक, तर्कपूर्ण, कार्यक्षम, प्रस्तावित और परीक्षण योग्य कथन है जो यह बताता है कि अनुंधानकर्ता क्या देखना चाहता है अर्थात् समस्या कैसे हल हो सकती है या अन्वेषण आगे कैसे होना है परीक्षण में यह कथन सत्य भी हो सकता है और गलत भी सिद्ध हो सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
2. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया से छात्र और छात्राओं के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्योंथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज है। अतः रीवा जिला अन्तर्गत स्थित प्राथमिक व उच्च प्राथमिक (प्रारंभिक शिक्षा स्तर) विद्यालय, जनपद शिक्षा केन्द्र तथा जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित कार्य इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये है।

लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 180 शिक्षक प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, ब्लाक शिक्षा समन्वयक, जिला परियोजना समन्वयक तथा 2–2 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया जायेगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनो दृष्टिकोण से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. शोध विधि

शोध क्षेत्र रीवा जिले के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रशिक्षक व अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

7. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005)[3], पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013)[4], गुप्ता, एस.पी. (1997)[5], सिंह अरूण कुमार (2001)[6] एवं त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन (2007)[7] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

8. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना – 1 "शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है"

सारणी 1 : रीवा जिले के दक्षता आधारित प्रषिक्षण में षिक्षकों, प्रधानाध्यापक, प्रषिक्षक एवं अभिभावक की सहभागिता का अध्ययन

क्र.	जानकारी प्राप्त करने के स्त्रोत	न्यादर्श में चयनति कुल संख्या	शिक्षकों की सहभागिता के संबंध में स्वीकृति व सहमत					
			शत–प्रतिशत सहमत		60 से 80 प्रतिशत सहमत		60 प्रतिशत से कम	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	180	108	60.00	54	30.00	18	10.00
2.	प्रधानाध्यापक	90	65	72.20	16	17.77	9	10.00
3.	प्रशिक्षक	9	3	33.30	6	66.66	–	–
4.	अभिभावक	180	104	57.77	53	29.44	19	10.55

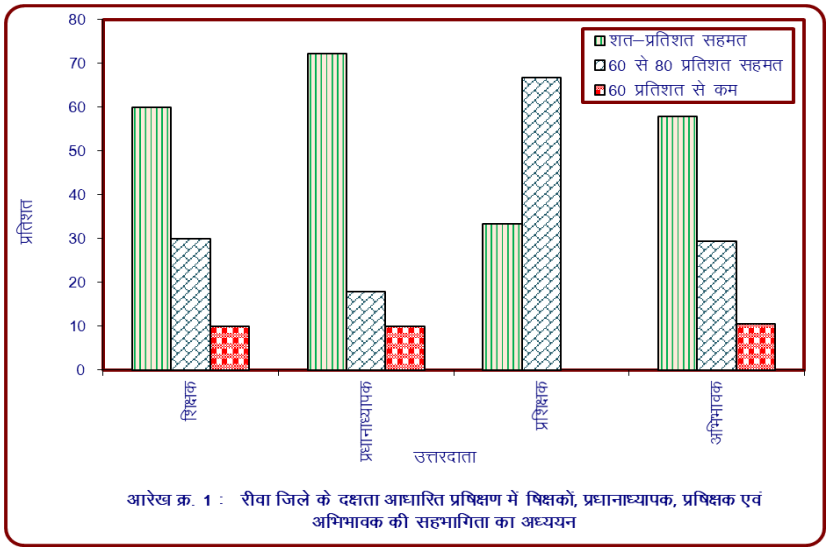

आरेख क्र. 1 : रीवा जिले के दक्षता आधारित प्रषिक्षण में षिक्षकों, प्रधानाध्यापक, प्रषिक्षक एवं अभिभावक की सहभागिता का अध्ययन

विष्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक 1 के व्याख्या एवं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत शिक्षकों ने दक्षता प्रशिक्षण में शत–प्रतिशत सहभागिता की है। 30 प्रतिशत शिक्षक 60 से 80 प्रतिशत के बीच सहभागिता की है। लेकिन 10 प्रतिशत शिक्षक 60 प्रतिशत से कम सहभागिता की है। प्रधानाध्यापक की 65 प्रतिशत सहभागिता दक्षता शिक्षण में शत–प्रतिशत की है, तथा 60 से 80 प्रतिशत के बीच 17.77 प्रतिशत सहभागिता की है। इसी प्रकार 60 से कम 10 प्रतिशत प्रधानाध्यापक सहभागिता की है। किन्तु 33.3 प्रतिशत प्रशिक्षको का मत है कि दक्षता प्रशिक्षण में शिक्षकों की सहभागिता शत–प्रतिशत है। 66.66 प्रतिशत की 60 से 80 प्रतिशत की सहभागिता की है। इसी प्रकार 57.77 प्रतिशत अभिभावकों ने दक्षता प्रशिक्षण में शत–प्रतिशत सहभागिता की है। 29.44 प्रतिशत अभिभावकों ने 60 से 80 प्रतिशत सहभागिता की है, जबकि 10.55 अभिभावक ने 60 प्रतिशत से भी कम सहभागिता की है। अतः विश्लेषण और व्याख्या से ज्ञात होता है कि शोध क्षेत्र के अधिकांश शिक्षकों ने दक्षता आधारित प्रशिक्षण में सहभागिता की है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

सारणी 2 : रीवा जिले के दक्षता आधारित प्रषिक्षण में कठिन अंषों पर प्रभावी षिक्षण का अध्ययन

क्र.	जानकारी प्राप्त करने के स्त्रोत	न्यादर्श में चयनति कुल संख्या	प्रशिक्षण में विषय के कठिन अंशो पर प्रभावी शिक्षण के सम्बन्ध में स्वीकृत पर सहभागिता					
			पूर्ण प्रभावी ढंग यानि शत–प्रतिशत सहमत		आंशिक रूप से किया गया		नही किया	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	180	102	56.66	18	10.00	60	33.33
2.	प्रधानाध्यापक	90	60	66.66	12	13.33	18	20.00
3.	प्रशिक्षक	9	5	55.55	3	33.33	1	11.11
4.	अभिभावक	180	101	56.11	13	7.22	66	36.66

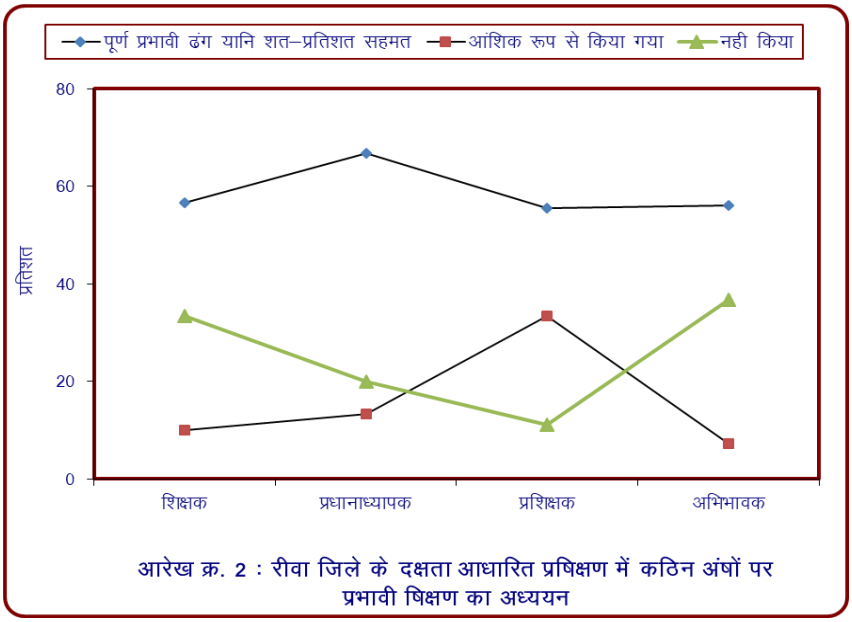

आरेख क्र. 2 : रीवा जिले के दक्षता आधारित प्रषिक्षण में कठिन अंषों पर प्रभावी षिक्षण का अध्ययन

विष्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 56.66 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि दक्षता प्रशिक्षण में विशय के कठिन अंशो का प्रभावी शिक्षण, प्रशिक्षण द्वारा पूर्व ढंग में किया है, लेकिन 10 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि आंशिक रूप से किया है तथा 33.33 प्रतिशत शिक्षकों के अभिमत परीक्षण में कठिन अंशो पर प्रभावी शिक्षण नही किया गया है। अव प्रधानाध्यापकों के अभिमत से 66.66 प्रतिशत प्रशिक्षण के ही कठिन अंशों का प्रशिक्षण पूर्ण प्रभावी ढंग से से किया गया है, तथा 13.33 प्रतिशत, आंशिक रूप में किया गया है। तथा 20 प्रतिशत प्राधानाध्यापकों का मत है कि अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण नही किया है। साथ प्रशिक्षक के अभिमत से 55.55 प्रतिशत प्रशिक्षकों दक्षता प्रशिक्षण के विषय के कठिन अंशों का प्रभावी शिक्षण पूर्ण ढंग से किया गया है। तथा 33.33 प्रतिशत प्रशिक्षक के आंशिक रूप से किया है। साथ ही 11.11 प्रतिशत प्रशिक्षकों का अभिमत है कि प्रशिक्षण के कठिन अंशों पर प्रभावी शिक्षण नही किया गया है। इसी प्रकार 56.11 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि दक्षता प्रशिक्षण के विषय के कठिन अंशों का मत है कि शिक्षण आंशिक रूप से प्रभावी शिक्षण किया और 36.66 प्रतिशत अभिभावकों का मत है कि प्रशिक्षण में कठिन अंशों पर प्रभावी शिक्षण नही किया। उपरोक्त कथन के आधार पर इस तथ्य की पुष्टि होती है कि दक्षता प्रशिक्षण के दौरान कठिन अंशों का प्रशिक्षण प्रशिक्षकों द्वारा हुआ।

अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

9. निष्कर्ष

शोधार्थी द्वारा शोध क्षेत्र के अनेक विद्यालयो के शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रशिक्षक व अभिभावकों के अभिमत पर आधारित निष्कर्ष प्राप्त हुआ। शोध क्षेत्र के 57.77 प्रतिशत अभिभावकों ने दक्षता प्रशिक्षण में शत–प्रतिशत सहभागिता की है। 29.44 प्रतिशत अभिभावकों ने 60 से 80 प्रतिशत सहभागिता की है। जबकि 10.55 अभिभावक ने 60 प्रतिशत से भी कम सहभागिता की है। अतः विश्लेषण और व्याख्या से ज्ञात होता है कि शोध क्षेत्र के अधिकांश शिक्षकों ने दक्षता आधारित प्रशिक्षण में सहभागिता की है।

इसी प्रकार 56.11 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि दक्षता प्रशिक्षण के विषय के कठिन अंशों का मत है कि शिक्षण आंशिक रूप से प्रभावी शिक्षण किया और 36.66 प्रतिशत अभिभावकों का मत है कि प्रशिक्षण में कठिन अंशों पर प्रभावी शिक्षण नही किया। उपरोक्त कथन के आधार पर इस तथ्य की पुष्टि होती है कि दक्षता प्रशिक्षण के दौरान कठिन अंशों का प्रशिक्षण प्रशिक्षकों द्वारा हुआ।

10. संदर्भ

1. द्विवेदी देवेन्द : 'विभिन्न धर्मों को मानने वाले छात्र–छात्राओं की शिक्षा एवं धर्म के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'',शोध ग्रंथ द्वारा उद्धृत, पी–एच.डी., सी. एस. जे. एम. वि. वि., कानपुर, 2012; पृष्ठ–42।
2. श्रीवास्तव डॉ. डी. एन : 'अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा, संस्करण–1992, पृष्ठ–96।
3. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, 2005.
4. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013.
5. गुप्ता, एस.पी. : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997.
6. सिंह अरूण कुमार : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, चतुर्थ संस्करण, मोतीलाल नगर बनारसीदास दिल्ली, 2001.
7. त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन : शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007.